प्रश्न 3. छायावादी कवियों के सौंदर्य-बोध पर विचार कीजिए।

उत्तर : छायावादी काव्य सौंदर्य की उत्पत्ति के विषय में छायावाद की ओर से बोलते हुए निराला ने स्पष्ट कर दिया कि इसकी उत्पत्ति कवि के उस हृदय से हुई है जो सामाजिक आंदोलन से उत्थित भावावेग और कल्पना को धारण करने वाला है। अर्थात् रूपविन्यास आंतरिक सौंदर्य भावना का परिणाम होता है। छायावाद के पूर्ववर्ती द्विवेदी युग की कविता में जो अत्यंत सादगी और अनलंकृति दिखाई पड़ती है, उसे शुद्धतावादी भावना का परिणाम समझना चाहिए।

लेकिन छायावादी कवि के हृदय में प्रेम और शृंगार की भावना हिलोरे ले रही थी। यदि किसी कवि के हृदय में साजसज्जा के लिए बाल-सुलभ उमंग थी, तो किसी के मन में यौवन सुलभ शृंगार की तरंग और किसी में अल्हड़ मस्ती की बाँकी अदा। वह कला के क्षेत्र में नए-नए प्रयोग करने वाला कलाकार था। सादगी उसका आदर्श नहीं और न कट्टर शुद्धिवादी रूप-विन्यास में उसका विश्वास। जहाँ एक उपमा से काम चल सकता है, वहाँ दस उपमाएं उड़ेल दीं और वे भी एक से एक अनूठी। सीधी बात भी एक प्रकार की विलक्षण-सी भंगिमा में खड़ी है।

परंतु यह अलंकारप्रियता, यह रूप सज्जा रीतिवादी कविता से काफ़ी भिन्न है। रीतिकाल और छायावाद की कविता के रूपविन्यास में वही अंतर है जो दोनों युगों की नारियों अथवा पुरूषों के रूप-विन्यास में है। रीतिकाल की कविता मध्ययुगीन राजा और रानी की तरह अनेक प्रकार के आबेध्य, निबंधनीय, प्रक्षेप्य और आरोस्य अलंकारों का पुंज मालूम होती है। स्वयं छायावादी कवियों ने उसकी कम आलोचना नहीं की है। 'पल्लव' की भूमिका में इसका मजाक उड़ाते हुए पंत कहते हैं : "स्वस्थ वाणी में जो एक सौंदर्य मिलता है, उसका कहीं पता नहीं।"

रीतिकाल और छायावाद की कविता के रूपविन्यास का अंतर अलंकारों की बहुलता और न्यूनता का नहीं, बल्कि उन अलंकारों के पीछे काम करने वाली रूचि अथवा सौंदर्य भावना का है। एक के पीछे मध्ययुगीन रूचि है तो दूसरी के पीछे आधुनिक।

रीतिकाल तक आते-आते कवि का प्रकृति से संबंध टूटने लगा। नारी की स्वतंत्रता कम होने लगी। उसके प्रसाधन की सामग्रियाँ बदल चलीं। उसकी सौंदर्य भावना संकुचित और रूढ़िग्रस्त हो गई। इसलिए रीतिकालीन कविता के अलंकार एकदम ऊपर से आरोपित प्रतीत होते हैं। छायावादी कवियों ने इस रूढ़िवादिता और कृत्रिमता को भाँप लिया इसलिए उन्होंने कविता के रूपविन्यास में भावों को प्रमुखता दी। 'पल्लव' की भूमिका में पंत लिखते हैं :

"अलंकार केवल वाणी की सजावट के लिए नहीं; वे भाव की अभिव्यक्ति के विशेष द्वार हैं। भाषा की पुष्टि के

Scanned with CamScanner

लिए, राग की परिपूर्णता के लिए वे आवश्यक उपादान हैं; वे वाणी के आचार, व्यवहार, रीति, नीति हैं; पृथक् स्थितियों के पृथक् स्वरूप, भिन्न अवस्थाओं के भिन्न चित्र हैं।"

छायावाद ने पुराने रीतिकालीन अलंकार विधान को छोड़ दिया तो इसका अर्थ्ज्ञ है कि छायावाद ने अपना ध्यान प्रभाव साम्य पर विशेष रूप से केंद्रित किया; जबकि पुराने कवि आकार साम्य की ओर दौड़ते थे। जैसे रीतिवादी कवि बादल के लिये आकार साम्य पर 'हाथी' की उपमा देते थे; लेकिन जब पंत ने उसे 'धीरे–धीरे उठ संशय–सा' कहा तो उनका ध्यान बादल के धीरे–धीरे उठने वाले धर्म की ओर गया प्रेयसी को 'चंद्रिका की झंकार' तारिकाओं की तान आदि कहना भी इसी प्रभाव–साम्य का ही परिणाम है। छायावादी अंतर्दृष्टि ने यदि एक ओर विराट उपमाओं की योजना की तो दूसरी ओर लघु–लघु अमूर्त उपमाओं का भी विधान किया, क्योंकि छायावाद का दृष्टिकोण प्रधानतः भाववादी था। छाया तो यूँ ही काफ़ी सूक्ष्म वस्तु है, पर उसकी उपमा देते हुए पंत कहते हैं :

"गूढ़ कल्पना–सी कवियों की
अज्ञाता के विस्मय–सी
ऋषियों के गंभीर हृदय–सी
बच्चों के तुतले भय--सी।"

छायावाद जड़ सामान्यता के विपरीत वैयक्तिक वैशिष्ट्य का प्रवक्ता था, व्यक्तिवाद उसका बीजमंत्र था। इसलिए वह सिद्धांततः चित्रमयता का पक्षपाती था। यह चित्रमयता थोड़े–बहुत अंतर के साथ सभी छायावादी कवियों में है। जैसे 'नौका–विहार' में पंत चांदनी–चर्चित लहरों का चित्रण पूरे ब्योरे के साथ इस तरह करते हैं :

"साड़ी की सिकुड़न–सी जिस पर, शशि की रेशमी विभा से भर
सिमटी है वर्तुल मृदुल लहर।
फैले फूले जल में फेनिल।"

छायावाद के बारे में आलोचकों का कहना है कि इस काव्य शैली पर प्रतीकवाद की भी छाप भी। हर युग की कविता में कुछ न कुछ उपमान रूढ़ होकर प्रतीक बन जाते हैं। छायावादियों ने तो यह माना है कि संपूर्ण चर–अचर प्रकृति अथवा दृश्य जगत एक प्रतीक है। जैसे उस अज्ञात प्रियतम की रहस्यात्मकता के लिए प्रायः आवरण वाले प्रतीकों का प्रयोग किया गया। महादेवी ने कहा है :

(1) "रजत रश्मियों की छाया में धूमिल घन–सा वह आता।"

(2) "करूणामय को भाता है तम के परदे में आना।"

परंतु छायावाद में रहस्य–प्रतीक बहुत थोड़े हैं। जिन्होंने ऐसी रचनाएँ की हैं, उनमें प्रसाद के प्रतीक अन्य अप्रस्तुत विधानो की ही तरह प्रायः रूढ और शुक्ल जी के शब्दों में सांप्रदायिक

Scanned with CamScanner